

SHRI DARIPALLI RAMAIAH

Shri Daripalli Ramaiah, popularly known as Vanajeevi Ramaiah and “Chetla (Man of trees) Ramaiah” has planted more than one crore saplings till now. Undaunted by his poverty, he has been carrying the mission for the last five decades.

2. Born on July 1,1946 Shri Ramaiah received no formal education. By profession he is potter but continued to be a relentless and untired messiah of “Vriksho Rakshita Rakshitaha”. His life is a synonym for afforestation. 'Vanajeevi' Ramaiah, as he is widely known for his invaluable contribution to expanding tree cover - particularly bio-diesel plants – hails from Reddypally village in Khammam Rural Mandal of Telangana State. He is estimated to have planted more than one crore saplings, including shady trees such as neem, and biodiesel plants like ganuga (pongamia) in Khammam and other parts of the district.

3. A self motivated person, Shri Ramaiah started his mission at an early age. He cherished his dream by collecting seeds from forests and is in the habit of growing the sapling in his vicinity and distributing them among people. He wrote slogans related to afforestation and conveyed his message in schools and colleges to promote awareness among the young Indians. Familiar to one and all as 'Vanajeevi,' he is a man with thousands of trees growings to his credit. He collects the waste plastic covers from refuse boxes with a purpose. He uses them for raising saplings of a wide range of species. He doubles up his role as a cleaner of the plastic waste at public places. His service is selfless and is purely voluntary as he was never found stretching his hands for any kind of help.

4. Shri Ramaiah's daily routine starts with the slogan“Vruksha Koti is like Ram Koti. Like write or chant Ram one crore times for moksha, plant a crore saplings for a pollution-free world.” He was taken to be mad in his early days of his mission but his constant endeavour made the people to think. Though uneducated, he knows the value of communication. He writes slogans on every available object, sing songs, and addresses school children. He presents saplings as wedding gifts. He relied on inventive visuals to drive his points, taking enlarged currency notes with pictures of trees on them to depict them as wealth. In spite of his impairment of hearing problems, he continued his endeavor with help of his wife Janamma. He has spoken about tree protection at 300 schools, 170 offices and 162 temples in Khammam.

5. Shri Ramaiah is the recipient of many awards and honours. He was honoured with “Haritha Mitra” by the government of Telangana in 2016. On March 8th, 2013, he was honoured at the Rashtrapathi Bhavan with “Srushti Samman”. On April 18th, 2013 he was awarded Doctorate by the Academy of Global Peace Organization, Bangalore. On 8th May, 2012 he was honoured with “Bharatheedu” award by the Telangana state Kalaparished. The Andhra Pradesh Pollution Control Broad felicitated him with the award 'Protection of Environment and Planting One Crore Seedlings”. In 1995, he was honored with “Paryavaran Parirakshak” by the Central Ministry of Seva Awards. Centre for Media Service Delhi, honoured him with “Vanamitra” Award. His personalized approach towards “save the earth”, was first recognized by the district authorities and he was made the member of the District Environment Protection Committee. He campaigned for planting trees in schools campuses to create “Shantiniketan” kind of environment.



श्री दरिपल्ली रामया

आमतौर से वनजीवी रामया ओर ''चेतला (वृक्ष-मानव) रामया'' के नाम से मशहूर श्री दरिपल्ली रामया ने अब तक एक करोड़ से भी अधिक वृक्षों का पौधरोपण किया है। अपनी निर्धनता के बावजूद आप पिछले पांच दशकों से इस मिशन को चला रहे हैं।

2. आपका जन्म 01 जुलाई, 1946 को हुआ था। आपने कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ग्रहण की। आप पेशे से कुम्हार है परंतु आप हमेशा से ''वृक्षो रक्षित रक्षित:'' के अनवरत एवं अथक मसीहा हैं। आपका जीवन वृक्षारोपण का पर्याय बन गया है। वनजीवी रामया, जैसा कि आपको व्यापक तौर पर आपके वृक्ष-बचाव-विशेषकर बायो-डीजल पादपों के विस्तार के प्रति किए गए अमूल्य योगदान के लिए जाना जाता है, तेलंगाना राज्य के खम्माम ग्रामीण मंडल के रेड्डीपल्ली गांव के रहने वाले हैं। एक अनुमान के अनुसार आपने खम्माम तथा जिले के अन्य भागों में छायादार वृक्षों जैसे नीम और बायो डीजल के पौधे जैसे गनुगा (पोंगामिया) सहित एक करोड़ से भी अधिक वृक्षों का पौधरोपण किया है।

3. एक आत्मप्रेरित व्यक्ति के रूप में आपने यह मिशन बहुत छोटी उम्र से शुरू कर दिया था। आपने इस सपने को जंगलों से बीज एकत्रित करके साकार किया तथा पौधों को अपने आस-पास उगाकर उन्हें लोगों के बीच वितरित करने की अपनी आदत बना ली है। आपने वृक्षारोपण से जुड़े कई नारे लिखे और युवा भारतीयों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए अपने संदेशों को स्कूलों और महाविद्यालयों तक पहुंचाया। सभी के बीच में वनजीवी के नाम से मशहूर आप वह शख्सियत हैं जिन्हें हजारों पेड़ों को उगाने का श्रेय जाता है। आप इस प्रयोजन के लिए कचरे के बक्सों से बेकार प्लास्टिक के थैलों को एकत्रित करते हैं। आप इन थैलों का प्रयोग विभिन्न नस्लों की व्यापक रेंज के वृक्षपौध उगाने के लिए करते हैं। आपकी यह सेवा नि:स्वार्थ है और विशुद्ध रूप से स्वैच्छिक है क्योंकि इसके लिए आपने कभी भी किसी के सामने मदद के लिए हाथ नहीं फैलाए।

4. आपके दैनिक कार्य की शुरूआत ''वृक्ष कोटि-राम कोटि के सदृश है, अर्थात् जिस प्रकार आप मोक्ष की प्राप्ति के लिए राम के नाम को एक करोड़ बार लिखते या जप करते हैं; उसी प्रकार प्रदूषण मुक्त संसार के लिए एक करोड़ वृक्षों की रोपाई कीजिए।'' के नारे से होती है। शुरूआत के दिनों में आपको अपने इस मिशन के लिए पागल की संज्ञा दी गई लेकिन आपके सतत् प्रयासों ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया। अशिक्षित होने के बावजूद आप संप्रेषण के महत्व को जानते हैं। आप किसी भी उपलब्ध वस्तु पर अपने नारे लिखते हैं, गीत गाते हैं और स्कूल के बच्चों को संबोधित करते हैं। आप वृक्षपौधों को शादी के तोहफे के रूप में भेंट करते हैं। आप अपने दृष्टिकोणों को आगे बढ़ाने के लिए आविष्कारी दृश्यों पर विश्वास रखते हैं, आप करेंसी नोटों को बड़ा करके उन पर पेड़ों के चित्र बनाकर उन्हें धन के रूप में दर्शाते हैं। सुनाई न देने की समस्या से जूझने के बावजूद आप अपनी पत्नी, जानम्मा की मदद से लगातार अपने प्रयासों में रत हैं। आपने खम्माम में 300 स्कूलों, 170 कार्यालयों और 162 मंदिरों में वृक्ष-संरक्षण के बारे में प्रवचन दिए।

5. आपको कई एक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपको वर्ष 2016 में तेलंगाना सरकार द्वारा ''हरितमित्र'' से सम्मानित किया गया। 08 मार्च, 2013 को राष्ट्रपति भवन द्वारा आपको ''सृष्टि सम्मान'' से सम्मानित किया गया था। 18 अप्रैल, 2013 को एकेडमी ऑफ ग्लोबल पीस आर्गेनाइजेशन, बंगलोर द्वारा 'डॉक्टरेट' की उपाधि से पुरस्कृत किया गया था। 08 मई, 2012 को तेलंगाना राज्य कला परिषद की ओर से ''भारतीडू'' से सम्मानित किया गया। आंध्र प्रदेश के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने आपको ''पर्यावरण संरक्षण एवं एक करोड़ पौधारोपण'' के सम्मान से पुरस्कृत किया। वर्ष 1995 में सेवा पुरस्कार, केन्द्रीय मंत्रालय द्वारा ''पर्यावरण परिरक्षक'' से सम्मानित किया गया। सेन्टर फॉर मीडिया सर्विस दिल्ली ने आपको 'वनमित्र' पुरस्कार से सम्मानित किया। ''पृथ्वी बचाओ'' की दिशा में आपके निजी दृष्टिकोण को सबसे पहले जिला प्राधिकारियों द्वारा समझा गया और आपको जिला पर्यावरण संरक्षण समिति का सदस्य बनाया गया। आपने विद्यालय परिसरों में ''शांति निकेतन'' की तरह का वातावरण सृजित करने के लिए वृक्षारोपण अभियान चलाए।